दीवार पत्रिका और अभिव्यक्ति के मौक़े

लवकुश यादव

शिक्षकों ने अपने स्कूल में दीवार पत्रिका बनाने का काम कैसे शुरू किया और उसके क्या प्रतिफल रहे, इस लेख में इसी काम का ब्योरा है। दीवार पत्रिका के बारे में हम सबने सुन ही रखा है और यह अवधारणा बहुत नई नहीं है। लेकिन इस लेख में हुए शिक्षकों के अनुभव, बच्चों के लेखन के नमूने एक नई ताज़गी का अहसास देते हैं। -सं.

यह लेख एक शासकीय प्राथमिक शाला में दीवार पत्रिका पर किए गए कार्य का ब्योरा है। इस दौरान लेखन कौशल पर काम करते हुए यह महसूस हुआ कि बच्चे स्वरचित कहानी, त्योहार मनाने के अनुभव, सन्दर्भ एवं परिवेश के जुड़ाव के बारे में लिख पा रहे हैं।

दीवार पत्रिका क्या है ?

दीवार पत्रिका के कई स्वरूप हो सकते हैं। हमने एक कैलेंडर नुमा आवरण पर चार्ट लगाकर इसे बनाया। दीवार पत्रिका में बच्चों के लिखे हुए को स्थान दिया जाता है। इसमें विविध प्रकार के लेख शामिल किए जा सकते हैं। ये लेख सम्पादकीय, यात्रा-वृत्तान्त, मुहावरे, चुटकुले, पहेली, मौलिक कहानी-कविता, अनुभव, त्योहार, जयन्ती, दिवस विशेष से जुड़े सन्दर्भ पर अनुभव, आदि से सम्बन्धित हो सकते हैं। इसमें शामिल पहलुओं में काफ़ी विविधता हो सकती है। दीवार पत्रिका मज़बूत हो, बच्चों के हाथ लगाने, छू जाने से बिगड़े नहीं, इसके लिए इसके पीछे गत्तों का सपोर्ट भी लगा सकते हैं। पत्रिका के संयोजन, प्रबन्धन, सम्पादन, आदि की ज़िम्मेदारी बच्चे ख़ुद ही ले लें तो अच्छा है। हमारे अनुभव में यह मुमकिन हो पाया। हालाँकि, इस सब काम में थोड़ी सावधानी भी रखनी होती है। मसलन, संयोजन के समय कैंची, कटर, आदि का इस्तेमाल करने में बच्चे ख़ुद को नुक़सान पहुँचा सकते हैं। ऐसी स्थिति से बचने के लिए दीवार पत्रिका तैयार करते समय शिक्षक को बच्चों के साथ रहना चाहिए। यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि अधिक-से-अधिक बच्चों के लेखों, चित्रों और अभिव्यक्ति को पत्रिका में स्थान मिलता रहे। इसी तरह, दीवार पत्रिका बनाने में सभी बच्चों की भूमिका हो, यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

उद्देश्य

- बच्चे अपनी मौलिक अभिव्यक्ति को प्रदर्शित कर पाएँ;
- अपने मन से कविता / कहानी या कुछ नया सोचने और लिखने की ओर बढ़ सकें;
- लेखन के अतिरिक्त मौक़े बनाकर लेखन कौशल को और विकसित कर सकें;
- एक दूसरे के लिखे को पढ़कर ज़्यादा-से-ज़्यादा लिखने को प्रोत्साहित हो सकें; और
- इसके साथ ही, एक दूसरे की रचना को पढ़कर उसपर अपना सुझाव दे सकें और स्व-आकलन भी कर सकें।

प्रक्रिया

यहाँ जिस स्कूल की बात हो रही है, उसमें बच्चे नियमित तौर पर कुछ-न-कुछ स्वैच्छिक लेखन करते रहे थे। इस लेखन में उनकी ख़ुद की लिखीं कहानियाँ, अनुभव, कविताएँ, चित्र आदि थे, और इनका कलेक्शन बनता जा रहा था।

इसी तरह, पुस्तकालय भी एक बेहतर साधन था। यहाँ बच्चे नियमित जो पुस्तकें पढ़ते, उनपर प्रार्थना सभा और बाल सभा में चर्चा करते। कक्षा में शिक्षक भी बच्चों की पढ़ी हुईं पुस्तकों पर सवाल-जवाब करते। इस सबसे भी बच्चों की भाषा, उनके अनुभव, शब्द भण्डार, आदि में बढ़ोतरी हुई। यह सब होने के साथ बच्चों के लिए लेखन के मौक़े बनाना ज़रूरी हो गया था। ये सारे सिलसिले दीवार पत्रिका के लिए ज़मीन तैयार करने का काम कर रहे थे। समझकर सुनना-बोलना, समझकर पढ़ना-लिखना, ऐसे ही सन्दर्भों में मुमकिन है।

अक्तूबर महीने में हमने भाषा समृद्ध कक्षा पर सत्र आयोजित किए थे, जिनमें इस स्कूल के दो शिक्षकों ने भाग लिया था। इन सत्रों में दीवार पत्रिका पर भी बात हुई थी। दोनों शिक्षक साथियों को दीवार पत्रिका का विचार बेहद अच्छा लगा। बातचीत के बाद उन्होंने बच्चों के लिखे लेखों, ख़ासकर कक्षा 4 और 5 के बच्चों के लेख, चित्र, आदि, को विद्यालय की दीवार पर गोंद से चिपकाना शुरू कर दिया। जब उस स्कूल में हम अगली बार गए, कक्षाएँ बच्चों द्वारा लिखी सामग्रियों से सजी थीं। सभी बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी अपने चित्र, लेख, आदि दिखा रहे थे। इस विज़िट के दौरान शिक्षक साथियों ने बताया कि मासिक बैठक सत्र में शामिल होने के बाद उन्होंने यह काम शुरू किया है। इसी दिन हमने शिक्षक साथियों से बात की कि इसे और बेहतर करने के लिए कुछ और भी सोच सकते हैं। अभी यह चित्र और लेख टुकड़ों में लगे हैं, अगर हम इन्हें एक साथ एक-दो जगह लगा सकें, यह और आकर्षक हो सकेगा। साथ ही यह भी कि तब ज़्यादा बच्चे इन्हें देख पाएँगे। यह कैसे हो पाएगा, इसका एक सुझाव बैठक में मिला ही था कि बच्चों के लिखे लेखों को चार्ट पर लगाकर प्रदर्शित कर सकते हैं। शिक्षक का कहना था कि चार्ट के पीछे गत्ता लगा सकते हैं। इससे चार्ट टिकाऊ हो सकेगा और फटेगा भी नहीं। दूसरी शिक्षिका ने कहा कि चार्ट को बच्चों द्वारा सजाने एवं लेख चिपकाने में वह उनके साथ मिलकर काम कर सकेंगी। इन ज़िम्मेदारियों को बाँट लेने के बाद बच्चों के साथ मिलकर हमने दीवार पत्रिका को शुरू किया।

बच्चों के साथ अगर नियमित संवाद का माहौल बनाया जाए, तब वे मौखिक अभिव्यक्ति करते हैं। इस अभिव्यक्ति में सिर्फ़ बोलना ही नहीं है, बल्कि बोलकर अपनी बात समझाना भी है। जब हम सुनकर समझने और बोलकर

अभिव्यक्त करने की बात कहते हैं, तब उसमें विचार का बनना भी एक ज़रूरी प्रक्रिया हो जाती है। बच्चा विचार करे, यह भाषा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य भी है। एक बार जब बच्चा विचार करना शुरू कर देगा, वह अभिव्यक्ति के दोनों स्तरों (मौखिक, लिखित) पर ख़ुद को अभिव्यक्त भी कर सकेगा। यह तय किया था कि हमें बच्चों को सीखने और अभिव्यक्त करने के अधिक-से-अधिक मौक़े देने हैं। इसकी शुरुआत प्रार्थना सभा से की गई। अभी तक शिक्षक साथी ही प्रार्थना सभा और प्रस्थान सभा में बच्चों के साथ कविता एवं कहानी सुनाते थे, अब बच्चे भी इस प्रक्रिया में शामिल हुए।

इसी क्रम में कक्षा में, समाचार गतिविधि की गई। इसमें बच्चे स्थानीय एवं परिवेशीय मुद्दों पर अपनी ख़बर बनाकर लाते और कक्षा में प्रस्तुत करते। धीरे-धीरे यह गतिविधि कक्षा में परिवेशीय मुद्दों को स्थान देने का प्रमुख ज़रिया बनी। यह इस मायने में महत्त्वपूर्ण रही कि बच्चे अपने आसपास की घटनाएँ (मसलन, गाँव में बन रही नाली, आसपास लगे मेले, कोई घटना-दुर्घटना, किसी का बर्थडे या कोई त्योहार मनाना, किसी यात्रा पर या कहीं घूमने जाना, आदि) कक्षा में साझा करते। शिक्षक भी इन्हीं बातों को रोज़मर्रा की चर्चा में लाते। माने, नाली कहाँ बन रही है; नाली की ज़रूरत क्यों है; नाली बनने के बाद कई लोग उसमें कूड़ा-करकट डाल देते हैं, इससे क्या नुक़सान होगा; सर्दी की छुट्टियाँ आपको कैसी लगीं; स्कूल बन्द होने पर आपको कैसा लगा; अगर आप मेले में गए तो आपको क्या पसन्द आया; मेले में कोई लड़ाई-झगड़ा तो नहीं हुआ; आप किसके साथ मेला देखने गए; आदि।

यह सब उस चर्चा के बिन्दु थे जिसको रोज़मर्रा की कक्षा प्रक्रिया में संवाद गतिविधि के रूप में शामिल किया गया। इस दौरान सभी बच्चे बेसब्री और उत्साह से संवाद एवं अनुभव रखने की प्रक्रिया में शामिल होते थे।

यही परिवेशीय अनुभव बच्चों के साथ हुई कई चर्चाओं को बेहतर बनाने में भी मदद कर रहा था। मसलन, शिक्षक जब बच्चों को 'संचार माध्यम' पाठ पढ़ा रहे थे, तब उन्होंने कहा कि आप मेला या कहीं और घूमने जाते हो तो मोटरसाइकिल या बाइक से जाते हो। लेकिन पहले के समय में जब मोटरसाइकिल, बाइक, गाड़ी, आदि नहीं थीं, तब लोग कैसे यात्रा करते होंगे? बच्चे इस सवाल पर सोचकर जवाब दे

पाए। बच्चों के साथ बातचीत के दौरान यह भूमिका बनी कि अभी भी पिसी (गेहूँ), उरद (उड़द), सोयाबीन जैसी फ़सलें बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी से लाते हैं। पहले लोग बैलगाड़ियों से चलते थे। बच्चों से पूछा गया, “उस समय सबके पास बैलगाड़ी भी न रही होगी तब?” बच्चे बोले, “किसी एक की बैलगाड़ी होगी और लोग उसपर बैठकर जाते होंगे।” अब शिक्षक ने बताया कि लोग पैदल भी यात्रा करते थे। अगर उन्हें कहीं जाना होता, तब वे राशन-पानी भरकर पैदल समूह में यात्रा को निकल पड़ते थे।

इसी तरह, चित्र पोस्टर पर काम के दौरान बच्चों को अलग-अलग नज़रिए से सोचने के मौक़े दिए गए। मसलन, ‘बग़ीचा’ पोस्टर पर हमने प्रश्न किया, “ऐसा क्या है, जो इस पोस्टर में नहीं है लेकिन आप उसे जोड़ना चाहते हैं?” लगभग सभी बच्चों ने सोचकर बताया, “यहाँ चौकीदार नहीं है, डस्टबिन नहीं है। अगर कोई कुछ खाएगा तो कूड़ा करकट कहाँ रखा जाएगा? इस पार्क में नल नहीं है। अगर किसी को प्यास लगी, वह पानी कहाँ पिएगा? बग़ीचे में वाशरूम भी नहीं है।” यहाँ बच्चे सोच-विचार करते हुए तुलना भी कर पा रहे थे और अपनी बात को चित्र से जोड़कर भी रख पा रहे थे। ऐसे ही एक बार ‘आम’ पर चर्चा हुई कि आम से क्या-क्या बनता है। बच्चों ने क्रम से बताया, चटनी, खटाई, मुरब्बा, आदि। एक बच्चा बोला, “आम से आमलेट भी बनता है।” इस बात पर शिक्षिका सहित सभी बच्चे हँस दिए। उस बच्चे से पूछा गया कि आम से आमलेट कैसे बनेगा। उसने बताया, “आम को जब काटते हैं, तो वह पीला-पीला होता है। मैंने देखा है कि आमलेट भी बनते समय पीला-पीला होता है और फिर वह रोटी जैसा हो जाता है।” सभी बच्चों के साथ शिक्षिका भी उसके द्वारा की गई तुलना को सराह रही थीं।

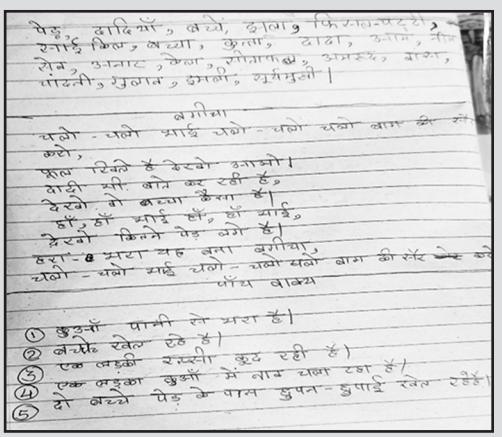

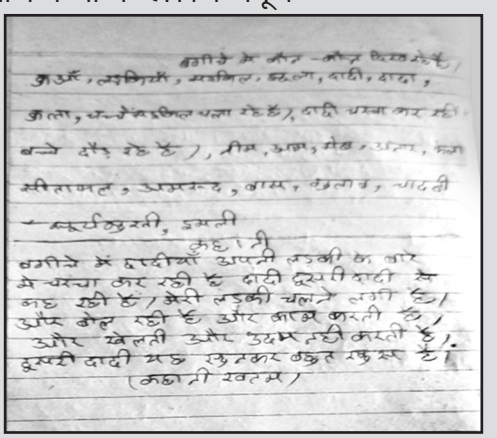

स्कूल में दशहरे व सर्दियों की छुट्टियों और अगर कोई त्योहार आया तो उसपर भी

चित्र पोस्टर पर काम के दौरान बच्चों के लेखन नमूने

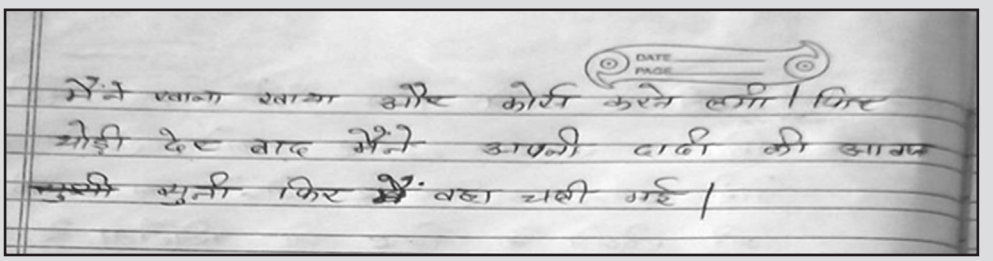

मैंने खाना खाया और कोशिश करने लगी। फिर थोड़ी देर बाद मैंने अपनी दादी की आवाज सुनी फिर मैं वहा चली गई।

बच्चों से संवाद किया गया। मसलन, उन्होंने इन छुट्टियों में क्या किया, कहाँ गए, कैसे त्योहार मनाया, आदि। ऐसे ही सवाल-जवाब द्वारा बच्चों के अनुभवों को सामने लाकर उन्हें समृद्ध करते हुए लेखन में लाया जाता। हालाँकि, प्रार्थना सभा, बाल सभा और प्रस्थान सभा में सभी बच्चे एक साथ मौखिक अभिव्यक्ति प्रक्रिया में भाग लेते ही थे।

लेखन के स्तर पर यह दीवार पत्रिकाएँ मुख्य रूप से चौथी-पाँचवीं के बच्चों ने बनाई थीं, लेकिन इनको सभी कक्षाओं के बच्चों को दिखाया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पहली से तीसरी कक्षा के बच्चों ने भी चित्रात्मक अभिव्यक्ति करने की कोशिश की। तीसरी कक्षा के बच्चों ने अपने बनाए चित्रों को दीवार पर चिपकाया, वहीं दूसरी कक्षा के

बच्चों के लेखन के कुछ और नमूने

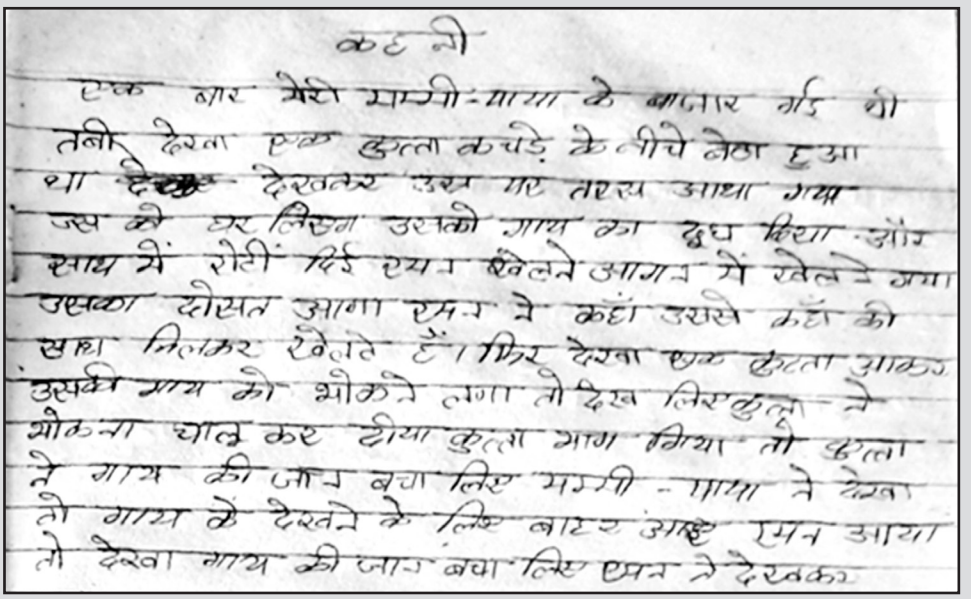

कहानी
एक बार मेरे मम्मी-पापा के बाजार गई थी
तभी देखा एक कुत्ता कचड़े के पीचे बैठा हुआ
था देखकर देखकर उस पर तरस आया गया
उस को घर लिएगा उसको गाय का दूध दिया और
साथ में रोटी दिई एमन खेलने आगन में खेलने गया
उसका दोसत आगा एमन ने कहा उससे कहा की
साथ मिलकर खेलते हैं। फिर देखा एक कुत्ता आकर
उसकी गाय को भौंकने लगा तो देख लिए कुत्ते ने
भौंकना चालू कर दीया कुत्ता भाग गिया तो कुत्ता
ने गाय की जान बचा लिए मम्मी-पापा ने देखा
तो गाय के देखने के लिए बाहर आइ एमन आया
तो देखा गाय की जान बचा लिए एमन ने देखकर

पुष्पा - 5
(कहानी)
रमन और पापा घर पर थे।
मम्मी बजार गई थी रमन और पापा
बैठे-बैठे सो गये। और।
गाय और कुत्ते की लड़ाई हो
रही थी। तभी मम्मी आ गई।
और गाय कुत्ते को उठाया किया।
मम्मी ने पापा और रमन को।
जगाया।

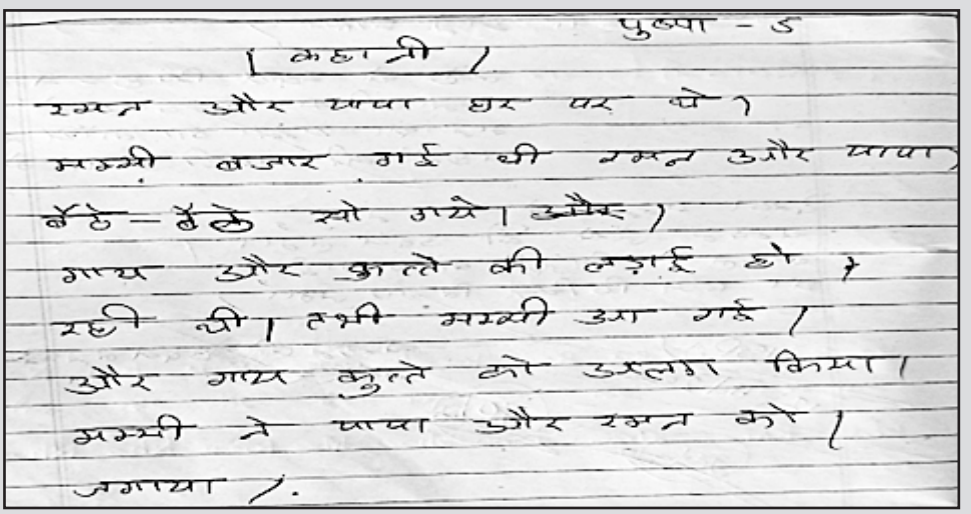

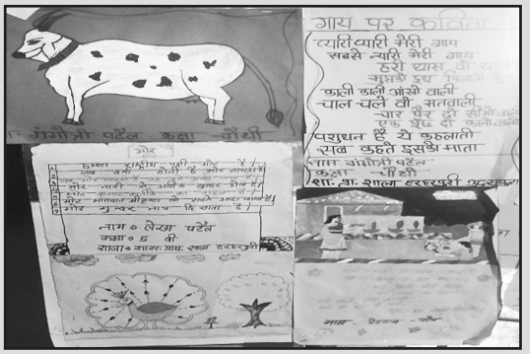

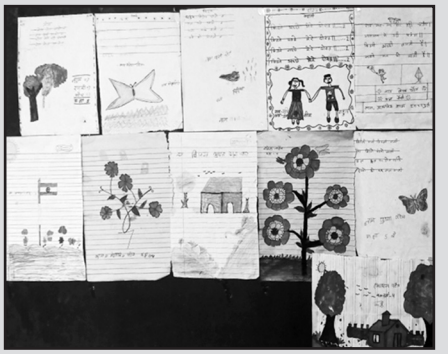

बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों को शिक्षक ने चार्ट शीट पर चस्पा करके दीवार पर लगाया। यहाँ हम देख पा रहे थे कि बच्चे वाक्यों को बेहतर तरीक़े से गढ़कर लिख पा रहे हैं। यह सब नियमित संवाद और लेखन के अवसर देने से सम्भव हो सका।

परिणाम

- बच्चे लिखने-पढ़ने की प्रक्रिया में शामिल हो रहे हैं। यहाँ वह गीत, चित्र, कथा-कहानी, आदि लिख-बना रहे हैं। इन सबको स्थान देने के लिए उन्हें दीवार पत्रिका का इन्तज़ार रहता है।
- इन प्रक्रियाओं में शामिल होकर बच्चों में धैर्य से सुनने और अपनी बात रखने का कौशल विकसित हुआ। दीवार पत्रिका के सामूहिक वाचन द्वारा बच्चे एक दूसरे की ग़लतियों को समझते हैं, और उन्हें सही करवाते हैं। इस तरह बच्चे ख़ुद ही सीखने-समझने में एक दूसरे की मदद कर रहे हैं।
- बच्चों के लिखे को, उनके अनुभवों को स्थान देने से उन्हें प्रोत्साहन मिल रहा है। वे सक्रियता एवं रुचि से पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में शामिल हो रहे हैं।
- बच्चे ख़ुद के और अपने दोस्तों के लिखे को बार-बार देख और पढ़ पाते हैं। यह उन्हें कई तरह से प्रोत्साहित करता है।
- बच्चे पहले जो टुकड़ों में लिखा करते थे, अब वे सुघड़ वाक्य विन्यास और सन्दर्भ के साथ लिख पा रहे हैं।
- शिक्षक साथी इन सब प्रयासों से काफ़ी उत्साहित हुए, और वे दिसम्बर महीने में आयोजित टीएलएम मेले में दीवार पत्रिकाओं एवं ख़ुद की बनाई टीएलएम के साथ शामिल हुए।
- संयुक्त रूप से आयोजित बाल शोध मेले में भी इस दीवार पत्रिका का बच्चों ने प्रदर्शन किया।

लवकुश यादव ने 2019 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में परास्नातक किया है। पिछले 4 सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। साहित्य पढ़ने एवं लिखने में रुचि है। बच्चों के साथ पढ़ने के अवसर एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति पर काम करने में गहरी रुचि है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, जिला सागर, मध्य प्रदेश टीम में काम कर रहे हैं।

सम्पर्क : lavkush.yadav@azimpremjifoundation.org